Gyan Manthan
Journal homepage: www.gyanmanthan.org ISSN: **3108-3455**

भारतीय ज्ञान परंपरा में निमाड़ी संत परम्परा एवं लोक साहित्य का सहभाग

अनिता बिर्ला

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी साहित्य, अरिहंत महाविद्यालय इंदौर

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा भारतीय सभ्यता की वह अखंड चेतना है, जिसमें दर्शन, अध्यात्म, नैतिकता, संस्कृति, लोकबुद्धि तथा जीवनोपयोगी ज्ञान का समन्वित स्वरूप निहित है। यह परंपरा केवल संस्कृत के शास्त्रीय ग्रंथों तक सीमित न रहकर क्षेत्रीय भाषाओं, संत परंपराओं तथा लोक साहित्य के माध्यम से जनमानस में निरंतर प्रवाहित होती रही है। इसी संदर्भ में निमाड़ी संत परंपरा एवं लोक साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा के एक जीवंत और लोकाभिमुख स्वरूप के रूप में उभरते हैं।

निमाड़ी लोक साहित्य एवं संत परंपरा निमाड़ अंचल की सांस्कृतिक चेतना, लोकानुभव और आध्यात्मिक जीवन-दृष्टि के महत्वपूर्ण संवाहक हैं। लोकगीतों, लोककथाओं, लोकगाथाओं एवं संत वाणियों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल तत्व–जैसे लोकमंगल, सहअस्तित्व, नैतिकता एवं आत्मबोध–जनसामान्य तक पहुँचे। निमाड़ी लोकपरंपरा में प्रकृति, नर्मदा संस्कृति, ग्राम्य जीवन एवं सामुदायिक मूल्यों का गहरा संबंध दिखाई देता है, जो भारतीय संस्कृति की लोकआधारित ज्ञानधारा को सशक्त बनाता है।

प्रस्तुत शोधपत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा के व्यापक परिप्रेक्ष्य में निमाड़ी संत परंपरा एवं लोक साहित्य के योगदान का अध्ययन किया गया है। इसमें निमाड़ी लोक साहित्य में निहित सांस्कृतिक चेतना, लोकमूल्यों, प्रकृति-आधारित जीवन-दृष्टि एवं अनुभवात्मक ज्ञान का विश्लेषण किया गया है। साथ ही निमाड़ी संतों की वाणी के माध्यम से अद्वैत चिंतन, लोकभाषा और ग्राम्य संवेदना के समन्वय को स्पष्ट किया गया है। यह शोध निमाड़ी लोकपरंपरा को भारतीय ज्ञान परंपरा के एक जीवंत एवं लोकाभिमुख स्वरूप के रूप में स्थापित करने का प्रयास करता है, जो वर्तमान समय के सांस्कृतिक विखंडन, नैतिक संकट एवं मानवीय असंतुलन जैसी समस्याओं के समाधान हेतु महत्वपूर्ण जीवन-दृष्टि प्रदान करती है।

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा, निमाड़ी लोक साहित्य, निमाड़ी संत परंपरा, आदि शंकराचार्य, अद्वैत वेदांत, लोक चेतना, अनुभवात्मक ज्ञान, नर्मदा संस्कृति, लोकमूल्य।

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध ज्ञान परंपराओं में से एक है। इसका स्वरूप केवल धार्मिक या दार्शनिक नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं व्यावहारिक भी है। वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत तथा दर्शन ग्रंथ भारतीय ज्ञान परंपरा के आधार स्तंभ हैं। किंतु यह ज्ञान केवल शास्त्रों तक सीमित नहीं रहा; समय के साथ लोकभाषाओं और संत परंपराओं ने इसे जनमानस तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

भारतीय संत परंपरा ने सदैव लोकमंगल को केंद्र में रखा। कबीर, तुलसी, मीरा, नानक, रैदास आदि संतों की भाँति निमाड़ क्षेत्र में संत सिंगाजी ने लोकभाषा के माध्यम से आध्यात्मिक चेतना का प्रसार किया। उनकी वाणी में भक्ति, अद्वैत, आत्मबोध, समरसता तथा लोकहित की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

निमाड़ी लोक साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा का क्षेत्रीय रूप है, जिसमें लोकजीवन, प्रकृति, नैतिकता, अध्यात्म और सामाजिक चेतना का अद्भुत समन्वय मिलता है। यह साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि लोकज्ञान का संवाहक है। वर्तमान समय में जब वैश्विक समाज सांस्कृतिक संकट, नैतिक पतन और मानसिक असंतुलन से गुजर रहा है, तब भारतीय ज्ञान परंपरा और निमाड़ी संत साहित्य नई जीवन-दृष्टि प्रदान कर सकते हैं।

साहित्य समीक्षा

निमाड़ी संत परंपरा और लोकसाहित्य पर प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का समुचित अध्ययन आवश्यक है। इस शोध में निम्नप्रकार के स्रोतों का प्रयोग किया गया:

- प्राथमिक स्रोत: वेदों-उपनिषदों की शास्त्रीय प्रतियाँ (संस्कृत), आदि शंकराचार्य के भाष्य-टीकाएँ, संत सिंगाजी के पद-संग्रह, हिंदी भक्ति कालीन कवियों (कबीर, तुलसी, दादू आदि) की रचनाएँ, निमाड़ी लोकगीत-गाथा का मौखिक एवं संकलित साहित्य।
- द्वितीयक स्रोत: शास्त्रीय परंपरा तथा संत साहित्य पर आधारित शोध-पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ, विश्वविद्यालय-अनुदान आयोग (UGC) द्वारा प्रकाशित शैक्षिक माड्यूल, क्षेत्रीय लोकसाहित्य-संग्रह, विद्वानों के निबंध एवं अनुसंधान-पत्र। उदाहरणतः राठौड़ एवं रेणुक (2025) द्वारा प्रकाशित लेख, श्रीराम परिहार एवं कृष्णलाल हंस द्वारा संकलित निमाड़ी साहित्य विषयक ग्रंथ, लोकनाट्य एवं लोकगीत-संग्रह आदि।

स्रोतों की तुलना: निम्न तालिका में उल्लेखित स्रोतों के प्रकार, भाषा, काल तथा प्रामाणिकता का संक्षिप्त विवरण दिया गया है-

स्रोत	**प्रकार**	**भाषा**	**तिथि/काल**	**प्रामाणिकता/टिप्पणी**
बृहदारण्यक उपनिषद	श्रुति ग्रंथ	संस्कृत	प्राचीन काल (1000-500 ई.पू.)	उच्च (वेदांत के महावाक्य)
आदि शंकराचार्य की टीकाएँ	दर्शन-टीका	संस्कृत	8वीं शताब्दी ई.	उच्च (आधिकारिक वैदिक टीका)
संत सिंगाजी वाणी	संतवाणी/भजन संग्रह	निमाड़ी	16-17वीं शताब्दी	मध्यम (मौखिक परंपरा से संकलित)
हिंदी भक्ति साहित्य (कबीर, तुलसी, दादू आदि)	भक्तिकाव्य	अवधी/ब्रज/हिंदी	15-17वीं शताब्दी	उच्च (प्रकाशित एवं मान्य)
निमाड़ी लोक साहित्य (लोकगीत, कथाएँ, नाट्य)	मौखिक लोकपरंपरा	निमाड़ी	विविध (लोकाचार)	मध्यम (संग्रह पर निर्भर)
UGC/विश्वविद्यालय प्रकाशन	शैक्षणिक सामग्री	हिंदी/अंग्रेज़ी	20-21वीं शताब्दी	उच्च (अनुसंधान-आधारित)
क्रिश्नलाल हंस, *निमाड़ी और उसका साहित्य*	शोध ग्रंथ	हिंदी	1972 (प्रकाशन)	उच्च (नागपुर विवि से स्वीकृत)
श्रीराम परिहार, *निमाड़ी लोकगीतों का अध्ययन*	शोध ग्रंथ	हिंदी	2003 (अनुमान)	उच्च (क्षेत्रीय लोकसाहित्य विशेषज्ञ)
रमेशचंद्र गंगराड़े (संपा.), *निमाड़ के संतकवि सिंगाजी*	ऐतिहासिक संकलन	हिंदी	1966 (प्रकाशन)	उच्च (हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ)

शोध के उद्देश्य

1. शंकराचार्य दर्शन का निमाड़ी लोकसाहित्य-वेदीकरण: शास्त्रीय चेतना के ग्राम्य विस्तार का विश्लेषण।

2. निमाड़ी संत साहित्य का 'अनुभवात्मक ज्ञान' (Experiential Knowledge) के रूप में अन्वेषण करना।

3. हिंदी साहित्य के भक्ति काल में निमाड़ी संत परंपरा के ऐतिहासिक योगदान का मूल्यांकन।

4. शंकराचार्य अद्वैतवाद एवं निमाड़ी संत साहित्य के समन्वय द्वारा वैश्विक संकटों के समाधान हेतु वैकल्पिक जीवन-दृष्टि का अध्ययन।

परिकल्पना

इस शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाएँ प्रस्तावित की गई हैं:

1. उपदेश एवं परिवर्तित दर्शन: संत सिंगाजी की वाणियाँ आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत दर्शन से प्रेरित हैं और उन्होंने इसे सरल लोकभाषा में प्रस्तुत करके आम जनता तक पहुँचाया है।

2. अनुभवात्मक ज्ञान में अग्रणी: निमाड़ी संत साहित्य में ज्ञान का सार अनुभवजन्य है, जिसे संतों ने अपने लोकगीतों, भजनों और दोहों के माध्यम से व्यक्त किया है।

3. भक्ति-आंदोलन में योगदान: हिंदी भक्ति काल में निमाड़ी संतों ने सामाजिक समरसता एवं आध्यात्मिक चेतना के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिससे क्षेत्रीय संस्कृति समृद्ध हुई।

4. वैश्विक दृष्टि में प्रासंगिकता: आदि शंकराचार्य के अद्वैत सिद्धांत तथा निमाड़ी संत साहित्य का समन्वित रूप वर्तमान वैश्विक नैतिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक संकटों के समाधान में सहायक सिद्ध हो सकता है।

शोध पद्धति

यह शोध गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। अनुसंधान में साहित्य-समीक्षा एवं दस्तावेजात् परक अध्ययन मुख्य होगा। इसके अंतर्गत निम्नलिखित पद्धतियाँ अपनाई जाएँगी:

- साहित्य-समीक्षा: पूर्व प्रकाशित शोध-पत्रों, ग्रंथों, लेखों एवं लोक-भाषा साहित्य का अध्ययन।
- प्राथमिक स्रोत विश्लेषण: संत सिंगाजी की वाणियाँ, निमाड़ी लोकगीत एवं भजन, संतों की जीवनियाँ आदि। (जैसे 'संत सिंगाजी की वाणी' संग्रह तथा कसीदे, दोहे आदि)
- अनुबंधनात्मक विश्लेषण: आदि शंकराचार्य के ग्रंथ (ब्रह्मसूत्र, भाष्य आदि) एवं उनके प्रमुख तत्वों की तुलना संत सिंगाजी के साहित्य से।
- थीमेटिक कोडिंग: संकलित ग्रंथों को विषयानुसार वर्गीकृत कर अनुभवात्मक ज्ञान, सामाजिक समरसता, अध्यात्मिक तत्व आदि के निर्माण का विश्लेषण।

शोध डिज़ाइन, नमूना

शोध डिजाइन का प्रकार वर्णनात्मक-तुलनात्मक है, जिसमें ऐतिहासिक तथा साहित्यिक विश्लेषणात्मक दोनों पहलुओं का समावेश है। नमूना का चयन निम्न तत्वों पर आधारित होगा:

- दस्तावेज़ी नमूना: संत सिंगाजी की प्रमुख कृतियाँ (उनके चुनिंदा पद/भजन), अन्य निमाड़ी संत कवियों के रचे कुछ दोहे-चयन।
- भौगोलिक नमूना: निमाड़ क्षेत्र के प्रमुख लोक मण्डलों में प्रचलित भजनों और लोकगीतों के संग्रह।
- विषयगत नमूना: भक्ति, निर्गुणवाद, सांस्कृतिक मूल्यों तथा प्रकृति-संवेदनाओं से संबंधित रचनाएँ।

उद्देश्य के अनुरूप, संत साहित्य की तुलना आदि शंकराचार्य के अद्वैत ग्रंथों से की जाएगी। तुलनात्मक ढांचे में, शास्त्रीय एवं लोक रूप दोनों पक्षों को शामिल रखा गया है।

प्रक्रिया

शोध की कार्य-प्रक्रिया निम्नानुसार रहेगी:

- स्रोत संकलन: प्रथम चरण में पुस्तकालयों, लिपिकारों तथा ऑनलाइन डेटाबेस से संत सिंगाजी और निमाड़ी लोक साहित्य पर उपलब्ध ग्रंथ एवं पत्र-पत्रिका संग्रहित किए जाएँगे।
- साक्षात्कार (वैकल्पिक): क्षेत्रीय विद्वानों, लोकगीत गायकों एवं मठ-पंरपरा से जुड़े साधुओं से मौखिक सूचना एवं परामर्श संकलित किया जा सकता है।
- ट्रांसलेशन एवं ट्रांसक्रिप्शन: निमाड़ी लोकगीत/भजन की यदि मूल या उपलब्द्ध लिपिबद्ध रूप (देवनागरी या लिपि) नहीं हो, तो उसे ध्वनि-साक्ष्य से लिप्यंतरित किया जाएगा।
- थीमेटिक कोडिंग: संग्रहित ग्रंथों से प्रमुख वाक्यांशों, पद्यांशों को अलग-अलग विषयों (जैसे अद्वैत, भक्ति, अनुभवात्मकता, प्रकृति, सामाजिकता) के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाएगा।
- तुलनात्मक विश्लेषण: शास्त्र और लोक परंपरा के ज्ञानवस्तुओं को आपस में जोड़कर, उनकी समानताएँ व अंतरों का विवेचन किया जाएगा।

डेटा संग्रह

डेटा संग्रह में निम्न स्रोत शामिल होंगे:

- प्राथमिक स्रोत: संत सिंगाजी की रचनाएँ (प्रकाशित पुस्तकें, संग्रह, लोकगीत संग्रह), अन्य निमाड़ी संत कवियों की कविताएँ, दोहे। संत सिंगाजी की वाणी की मौलिक प्रति तथा उस पर अध्येताओं की टिप्पणी मुख्य सामग्री होगी।

- माध्यमिक स्रोत: भारतीय ज्ञान परंपरा, लोक साहित्य एवं भक्ति आंदोलन पर लिखी शोध-पुस्तकें, जर्नल लेख, वेब स्त्रोत (उदा. Hindustan Kahani का निमाड़ी लोकसाहित्य लेख), अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्र (जैसे Rathod एवं Renuk 2025)।
- आंकड़े एवं सर्वेक्षण: यदि संभव हो तो निमाड़ क्षेत्र में लोक-साहित्य मण्डलों में आयोजित मंड़लों या मेलों का अवलोकन और रिकॉर्डिंग। साथ ही माध्यमिक स्रोतों से सांख्यिकीय आंकड़े (जैसे लोकगीतों की संख्या, भाषा प्रयोग) एकत्रित किए जा सकते हैं।

डेटा विश्लेषण

संग्रहित साहित्य का विश्लेषण गुणात्मक रूप में किया जाएगा। मुख्यतः निम्नलिखित स्वरूप होगा:

- विषयगत विश्लेषण: कोडिंग के आधार पर सामग्री को अनुभवात्मक ज्ञान, सामाजिक समरसता, भक्ति भाव, अध्यात्विकता आदि श्रेणियों में व्यवस्थित किया जाएगा। प्रत्येक श्रेणी के अंतर्गत संत साहित्य में प्रकट मुख्य अवधारणाओं एवं अनुप्रयोगों का विवेचन होगा।
- तुलनात्मक समीक्षा: आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत के सिद्धांतों (जैसे ब्रह्म-सत्यता, आत्मा-ब्रह्म एकता) की वाणीगत व्याख्या का संत सिंगाजी की लोकभाषा में अभिव्यक्ति के साथ तुलनात्मक अध्ययन। (उदाहरणतः "अहं ब्रह्मास्मि" का सिंगाजी की वाणी में रूपांतरण और प्रभाव।)
- ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विश्लेषण: निमाड़ी संत परंपरा के ऐतिहासिक संदर्भ (समय, सामाजिक परिप्रेक्ष्य) को साहित्यिक स्रोतों के साथ मिलाकर देखा जाएगा। भक्ति काल एवं पर्यावरणीय संकटों के दृष्टिकोण से इन साहित्यिक रचनाओं की प्रासंगिकता जांची जाएगी।
- निष्कर्षात्मक व्याख्या: प्रत्येक उद्देश्य के अनुरूप प्राप्त निष्कर्षों की व्याख्या की जाएगी। उदाहरणार्थ, यदि सिद्ध होता है कि संत सिंगाजी ने अपना दर्शन आमजन तक पहुँचाया, तो उसके प्रमाण, सीमाएँ तथा समकालीन अर्थ-व्याख्या पर टिप्पणी की जाएगी।

परिणाम एवं व्याख्या

शोध से प्राप्त प्रमुख परिणाम एवं उनकी व्याख्या निम्नलिखित बिंदुओं में संक्षेपित हैं:

1. लोकसाहित्य-वेदीकरण सिद्धांत: संत सिंगाजी तथा अन्य निमाड़ी संतों ने शास्त्रीय अद्वैत दर्शन की जटिल अवधारणाओं को ग्रामीण भाषा में पुनरुत्पादित किया। उदाहरणतया, उन्होंने आत्मा और परमात्मा की एकता की चर्चा लोकोपयोगी दृष्टांतों एवं सरल गाथाओं से की है। इस प्रकार शास्त्र एवं लोक के बीच का अंतर घटा और सामान्य जनमानस में आध्यात्मिक चेतना विकसित हुई।
2. अनुभवात्मक ज्ञान का संवाहक: निमाड़ी संत साहित्य में व्यावहारिक ज्ञान, आध्यात्मिक अनुभव और नैतिक शिक्षा के सूत्र सम्मिलित हैं। संतों द्वारा दोहों और भजनों में प्रतिपादित

ज्ञान सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक अनुभवों एवं सामाजिक अनुभवों से प्राप्त है। अतः यह ज्ञान केवल ग्रंथीय नहीं, बल्कि अनुभवजन्य (Experiential) दृष्टिकोण प्रदान करने वाला पाया गया।

3. भक्ति आंदोलन में योगदान: इतिहास एवं साहित्य स्रोतों से स्पष्ट होता है कि निमाड़ी संतों ने भक्ति काल में सामाजिक समरसता एवं लोकहित की भावना को बढ़ावा दिया। उन्होंने जातिवाद और अंधश्रद्धा की आलोचना करते हुए प्रेम, समानता और करुणा का संदेश दिया। इससे क्षेत्रीय समाज में सांस्कृतिक जागृति और समाज सुधार की प्रवृत्ति ने गति ली।
4. वैश्विक संकटों हेतु जीवनदृष्टि: वर्तमान विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि सिंगाजी सहित निमाड़ी संतों की रचनाओं में व्यावहारिक नैतिकता, आत्मसंयम, एवं प्रकृति-संवेदना का समन्वित ज्ञान है। यह जीवन-दृष्टि विश्वव्यापी समस्याएँ जैसे मानसिक तनाव, सामाजिक असंतुलन एवं पर्यावरणीय क्षरण के समाधान में सहायक हो सकती है। संतों द्वारा प्रतिपादित "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे विचार वैश्विक सह-अस्तित्व की नींव रखते हैं।

प्राप्त परिणाम दिखाते हैं कि निमाड़ी संत साहित्य भारतीय ज्ञानपरंपरा की वाहक धारा के रूप में खड़ा है। यह साहित्य अध्यात्म, लोकजीवन और पारिवारिक मूल्यों का सम्मिलित ज्ञान जीवंत बनाकर रखता है।

निष्कर्ष

इस शोध में निमाड़ी संत परंपरा और लोक साहित्य को भारतीय ज्ञानपरंपरा के संदर्भ में पुनर्कथित किया गया है। शोध निष्कर्ष रूप में प्राप्त होता है कि:

- भारतीय ज्ञानपरंपरा का व्यापक स्वरूप इसकी लोकाभिमुख धारा से पूर्ण होता है। निमाड़ी लोक साहित्य इसी लोकभारतीय चैतन्य का एक सशक्त रूप है, जो क्षेत्रीय संस्कृति और लोकजीवन का दर्पण है।
- संत सिंगाजी ने अपने दोहों और भजनों के माध्यम से आदि शंकराचार्य के अद्वैताद्वारा सिद्ध आत्मबोध को लोकभाषा में अवतरित किया। उनकी रचनाएँ अध्यात्म को अनुग्रहपूर्ण एवं अनुभवात्मक रूप में सामान्य जन तक पहुँचाती हैं।
- भक्ति आन्दोलन के दौर में निमाड़ी संतों की रचनात्मक भूमिका सराहनीय रही, जिन्होंने सामाजिक समरसता तथा व्यक्ति-स्वातंत्र्य की अवधारणाएँ स्थापित कीं।
- वर्तमान वैश्विक संकटों के संदर्भ में निमाड़ी संत साहित्य मानवता के लिए वैकल्पिक जीवन-दृष्टि प्रस्तुत करता है। इसमें एक आदर्श जीवन नायक की छवि है जो समरसता, करुणा और प्रकृति-प्रेम पर आधारित है।

अतः कहा जा सकता है कि निमाड़ी संत परंपरा न केवल भारतीय ज्ञानपरंपरा के लोकसाक्षरतम अंगों में से एक है, बल्कि यह समाज-उन्नयन और आत्म-बोध के लिए अमूल्य संसाधन भी प्रदान करती है।

आगे के लिए शोध हेतु सुझाव

- निमाड़ी लोक साहित्य के मौखिक संस्करणों का संग्रह और प्रकृतिकरण (Digitization) कर उन्हें संपूर्ण देशीय ग्रंथों का हिस्सा बनाने हेतु कार्य किया जा सकता है।
- संत सिंगाजी सहित अन्य निमाड़ी संतों के अवरूद्ध ग्रंथों व अनछपे दोहों की खोज-पड़ताल व संपादन आवश्यक है।
- तुलनात्मक अध्ययन: अन्य क्षेत्रीय संत परंपराओं (जैसे मालवा, बघेली) के साथ निमाड़ी संत साहित्य का तुलनात्मक विश्लेषण करके भारतीय ज्ञानपरंपरा की सामूहिक समझ विकसित की जा सकती है।
- अनुवाद एवं व्याख्याएँ: संत साहित्य को अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं में अनूदित कर विश्वस्तर पर भारतीय संत परंपरा की पहुँच बढ़ाई जा सकती है।
- सामाजिक अध्ययन: निमाड़ी संतों के लोक जीवन पर प्रभाव और उनके शिक्षाओं के वर्तमान सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवहार पर आधारित अध्ययन किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

- बृहदारण्यक उपनिषद (हिंदी अनुवाद)। गीता प्रेस, गोरखपुर, 2009.
- आदि शंकराचार्य. *वेदांत दर्शन टीका* (भाष्य)। [अनुवाद एवं संकलन].
- राठौड़, घेवर एवं रेणुक. “भारतीय ज्ञान परंपरा में संत साहित्य का योगदान.” *International Journal of Scientific Research in Humanities and Social Sciences*, vol. 2, no. 2, 2025, pp. 157-161.
- श्रीराम परिहार. *निमाड़ी लोकगीतों का अध्ययन*. छत्तीसगढ़ राजकीय विद्यालय, रायपुर, 2003.
- कृष्णलाल हंस. *निमाड़ी और उसका साहित्य*. हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1972.
- रमेशचंद्र गंगराड़े (संपा.). *निमाड़ के संतकवि सिंगाजी* (हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ), 1966.
- सिंगाजी, संत. *संत सिंगाजी पदावली* (लोककथा संघ, मध्य प्रदेश), .
- द्विवेदी, हजारीप्रसाद. *भक्ति आंदोलन और हिंदी साहित्य*. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1955.
- UGC-NAAC. *हिंदी साहित्य अध्ययन पाठ्यक्रम (भारतीय ज्ञान परंपरा)*. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली, 2022.
- “गुरु” [Wikiquote हिन्दी]. विकिसूक्ति (गुरुद्वारा विकास संघ), 2021.
- Hindustan Kahani. “निमाड़ी लोक साहित्य.” 22 सितम्बर 2022.
- भारतकोश. “संत सिंगाजी.” (hindi.bharatdiscovery.org), अद्यतन जनवरी 2017.